ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

"मंटो का साहित्य: समय के उन्माद पर लिखा करुणा का शिलालेख"

शशांक शुक्ला
अध्यक्ष,हिंदी विभाग ,
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल
ईमेल: parmita.shukla@gmail.com;

(1)

मंटो मेरा प्रिय लेख़क है ।बहुत कम लेख़क होते हैं, जो आपके प्रिय होते हैं ।जैसे बहुत कम व्यक्ति होते हैं ,जो आपको प्रिय लगते हैं ।किसी लेख़क के आत्मीय या प्रिय होने का वैसे तो कोई सैद्धांतिक आधार नहीं हो सकता...हाँ हृदय का एक कोना ऐसा अवश्य होता है ,जिसे ये लेख़क छू कर चले जाते हैं ।मतलब प्रिय होना 'आत्मनिष्ठ' धरातल है,'अपनी वस्तुनिष्ठता' के साथ ।श्रेष्ठ साहित्य के वैसे तो कई लक्षण होते हैं,किन्तु मेरी दृष्टि में श्रेष्ठ साहित्य का एक महत्वपूर्ण लक्षण है -ऐसा साहित्य जो आपको भावोद्रेक से अभिसिंचित कर दे ,करुणा उत्पन्न कर दे...यानी आपकी आँखों में आंसू ला दे ।मंटो की कहानियाँ यही काम करती हैं ।प्रेमचंद,भवभूति के साहित्य के बाद मंटो की कहानियों को पढ़कर मैं बार-बार रोया।कहानियों के बीच आँखों से आंसू बह निकले ।कई बार तो बीच में ही रुकना पड़ा ।शायद मेरे मन में कुलीनता की परत थी ,जो वर्षों से कहीं जमी थी...मंटो उसे कुरेद रहा था ।हाँ मैं मंटो को इसीलिए पसंद करता हूँ कि यह रचनाकार हमारी सभ्यता और हमें बार-बार झकझोर देता है ।टोबा टेक सिंह,खोल दो और अन्य कहानियों को पढ़कर मैं ज़ार-ज़ार रोया।एक साहित्य इससे ज़्यादा क्या कर सकता है कि वह आपकी आदमियत को ज़िन्दा करे...मंटो का साहित्य यही काम करता है ।

मंटो का साहित्य उसके अपने जीवन में विवादास्पद बना रहा ।क्या मंटों का साहित्य अपने समय से आगे का साहित्य था ? मंटो की जिन कहानियों को पढ़कर उस पर अश्लीलता फ़ैलाने का आरोप लगा...उस पर मुक़द्दमा चला...उन कहानियों में विवरण से आगे जाकर उन विवरण को पैदा करने की हकीक़त तक हम पहुंच पाए हैं ? मंटो संकेतों में अपनी बात नहीं कहता ...वह विवरण और खुले विवरण के बीच ...इत्मीनान से ...ब्यौरों के बीच जाकर...जैसे वह हर

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

घटना को स्वयं देख रहा हो या उसका स्वयं एक पात्र हो, इस ढंग से कहता है ।यह मंटो का अपना तर्ज़ है...अपनी शैली है ।स्वयं मंटो इसे 'परदा उठा देना' कहता है ।मंटो ने लिखा है- " ज़िन्दगी को उस शक़्ल में पेश करना चाहिए जैसी कि वह है ,ना कि वह जैसी होगी या जैसी होनी चाहिए ।" साहित्यकारों,सौन्दर्यशास्त्रियों का एक वर्ग यथार्थ को संकेतात्मक ढंग से कहने ,चित्रित करने में विश्वास करता है।ऐसे लोगों को मंटो की यह शैली नागवार गुज़रती है ।लेकिन हमें मंटो को अति- यथार्थवादियों या अतिप्राकृतवादियों (मनोविश्लेषणवादियों) से जोड़कर देखने से गुरेज़ करना होगा ।मंटो की कहानियाँ मनोविश्लेषण से आगे जाकर 'मन की ग्रंथियों' के बहाने 'समाज की ग्रंथियों' को खोलने का कार्य करती हैं ।इस प्रकार मनोविश्लेषण जहां व्यक्ति मात्र की मनग्रंथि तक केंद्रित हो जाता है,वहीँ मंटो की कहानियाँ 'समाज की ग्रंथि' के विश्लेषण तक जाती हैं ।मंटो के समय तक लेखन की यह शैली अप्रचलित थी (कई मायनों में आज भी अप्रचलित है...) ...इसीलिए उसे बार-बार अश्लील साहित्यकार कहा गया ।प्रश्न यह है कि 'बू' जैसी कहानियों का चित्रण आप किस मनोविश्लेषण से कर सकेंगे ? रणधीर जैसे ऐय्याश-कामुक पात्र,जिसके लिए स्त्री देह स्पंदन की भांति है, को घाटिन स्त्री के शरीर की गंध (बू) झकझोर कर रख देती है ।स्वयं कहानीकार की टिप्पणी है-" वह बिल्कुल असली थी,औरत और मर्द के शारीरिक सम्बन्ध की तरह असली और पवित्र।"(बू कहानी में मंटो ...)।अब इस कथ्य को आप किस मनोविश्लेषण से हल कर पायेंगे ? कामुकता के पीछे के व्यक्ति-समाज तक के पार्श्व तक मंटो ही पहुँच सकता था ।यहाँ स्त्री की देह ,देह से निकलकर समाज के सिस्टम तक चली जाती है ।ज़ाहिर है मंटो का उद्देश्य भी यही है ।लेकिन कितने लोग थे ,जो मंटो को तब और अब समझ रहे हैं ।स्वयं अपनी कहानियों के कथ्य पर टिप्पणी करते हुए मंटो ने लिखा है-"पतिव्रता स्त्रियां और नेकदिल औरतों के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है ।अब ऐसी दास्तान फ़िज़ूल हैं।अब ऐसी औरत का दिल खोलकर बताया जाए जो अपने पति के आगोश से निकलकर दूसरे औरत की बग़ल गरमा रही हो और उसका पति कमरे में बैठकर ऐसे देख़ रहा हो गोया कुछ न हो रहा हो ।" ×××"चक्की पीसने वाली औरत जो दिन भर काम करती है और रात को इत्मीनान से सो जाती है।मेरे अफ़सानों की हीरोइन नहीं हो सकती।मेरी हीरोइन चकले की एक शठियाई रंडी हो सकती है जो रात को पागल है और दिन को सोते समय में कभी-कभी ये डरावना ख़्वाब देखकर उठ बैठती है कि बुढ़ापा उसके दरवाज़े पर दस्तक देने आया है ।" स्पष्ट तौर पर मंटो का कथ्य सामान्य ढंग से दिखने वाले कथ्य के बीच करुणा का आरेख खोजता कथ्य है ।अन्यत्र एक जगह वे लिखते हैं-" ज़माने के जिस दौर में हम इस वक़्त गुज़र रहे हैं,अगर आप उससे नावाकिफ़ हैं तो मेरे अफ़साने

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

पढ़िए।अगर आप इन अफ़सानों को बर्दाश्त नहीं कर सकते तो इसका मतलब यह है कि यह ज़माना नाक़ाबिले-बर्दाश्त है ।मुझमें जो बुराईयाँ हैं, वो इस अहद की बुराईयाँ हैं।मेरी तहरीर में कोई नुक्स नहीं।जिस नुक्स को मेरे नाम से मंसूब किया जाता है,दरअसल मौजूदा निज़ाम का नुक्स है -मैं हंगामा पसंद नहीं ।मैं लोगों के ख्यालातों-जज़्बातों में हेजान पैदा नहीं करना चाहता।मैं तहजीबों-तमद्दुन और सोसाइटी की चोली क्या उतारूंगा,जो है ही नंगी ।मैं उसे कपड़े पहनाने की कोशिश भी नहीं करता ,इसलिए कि यह मेरा काम नहीं...।लोग मुझे सियाह क़लम कहते हैं,लेकिन मैं तख़्ता-ए-सियाह पर काली चाक से नहीं लिखता, सफेद चाक इस्तेमाल करता हूँ कि तख़्ता-ए-सियाह की सियाही और नुमायां हो जाए ।मेरा ख़ास अंदाज़,मेरा ख़ास तर्ज़ है,जिसे फहशनिगारी,तरक्कीपसंद और ख़ुदा मालूम क्या-क्या कुछ कहा जाता है -लानत है सहादत हसन मंटो पर,कमबख़्त को गाली भी सलीके से नहीं दी जाती ।" स्पष्ट है मंटो को अपनी आलोचना से नहीं अपनी कहानियों को न समझ पाने वाले आलोचकों से कष्ट है ।मंटो की एक ख़ास शैली थी,जो विवरण के बीच से कहीं दूर हमें ले जाना चाहती थी... लेकिन हममें से अधिकांश इसी विवरण में ही उलझ जाते हैं, तो इसमें मंटो के लेखन -शैली का क्या दोष ?

(2)

मंटो के साहित्य के सन्दर्भ में 'अश्लीलता' को बार-बार रेखांकित किया जाता रहा है ।प्रश्न है साहित्य के सन्दर्भ में अश्लीलता क्या उसी रूप में आती है,जैसे कि आम जीवन में आती है ? सामान्य व्यवहार में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध और उनके रति-व्यापारों का प्रदर्शन वल्गर/अश्लील कार्य समझा जाता रहा है (है भी...), किन्तु क्या साहित्य के सन्दर्भ में भी ऐसा ही है ? साहित्य में चित्रण की बजाय चित्रण की शैली और लेख़क का दृष्टिकोण ही मुख्य हुआ करता है।हम अपनी बात प्रारम्भ करें,उससे पूर्व इस सम्बन्ध में मंटो के कथन को ही देख लें-"ज़बान में बहुत कम लफ़्ज फ़हश हैं ।तरीके इस्तेमाल ही एक ऐसी चीज़ है जो पाकीज़ा-से-पाकीज़ा अल्फ़ाज़ भी फ़हश बना देता है ।मेरा ख़्याल है कि कोई भी चीज़ फ़हश नहीं,लेकिन घर की कुर्सी और हांडी भी फ़हश हो सकती है,अगर उसको फ़हश तरीके से पेश किया जाए-फ़हश चीजें बनाई जाती हैं;किसी ख़ास गाज़ के मातहत। " स्पष्ट है कि मंटो चित्रण की कुशलता और लेखकीय दृष्टिकोण को मुख्य मानता है।साहित्य के सन्दर्भ में स्थूल चीज़ें वही नहीं रह जातीं।साहित्य में आकर मनोवृत्तियां संयोजित हो जाती हैं...और इस क्रम में लेख़क नए प्रयोग करता चलता है ।यहाँ काम और प्रेम के अन्तर्सम्बन्ध के

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

सन्दर्भ में साहित्य में उनके रूपांतरण की प्रक्रिया को समझना उचित होगा ।काम से प्रेम व प्रेम से काम में रूपांतरण की प्रक्रिया सामजिक-मनोवैज्ञानिक रूप में भले ही अलग ढंग से आती हो,किन्तु साहित्य में इनके आगमन की प्रक्रिया का अपना ही 'ठाट' है।साहित्य में इसी ठाट/ट्रीटमेंट या दो दरवाज़ों(काम/प्रेम) की आवाजाही उसे विशिष्ट रूप प्रदान करती है।प्रश्न यह है कि सामजिक रूप से वर्जित विषय(काम चित्रण) होने के बावज़ूद एक साहित्यकार अपनी रचना में कामोद्दीपन के चित्र क्यों भरता है ?क्या मात्र इसलिए कि यह मनुष्य की मूल वृत्ति है और मूल वृत्ति का पाठन आकर्षक होता है ; क्योंकि यह मूल वृत्ति की तात्कालिक-मानसिक पूर्ति होती है ? या साहित्यकार का कोई विशेष प्रयोजन होता है ? एक उत्कृष्ट साहित्यकार(कालिदास,सूर,विद्यापति,मंटो....) जब अपनी रचना में कामोद्दीपन के खुले चित्र प्रस्तुत करते हैं तो उनका उद्देश्य क्या लोगों की दमित भावनाओं को संतुष्ट करना मात्र हो सकता है ? एक श्रेष्ठ रचना हमारे भावों का उदात्तीकरण करती है ।काम के प्रति हमारी कुंठा का शमन कर वह हमें प्रेम के लिए तैयार करती है।(शिव-कामदेव -पार्वती का रूपक...) साहित्य में व्यक्त मनोवृत्तियां केवल हमारा रेचन नहीं करती, बल्कि वे हमारे मनोभावों का विस्तार-विस्फार भी करती है।एक कुशल रचनाकार जब अपनी रचना में श्रृंगार/काम के चित्र उपस्थित करता है तो उसके पीछे उसका उद्देश्य उस वृत्ति(काम) के प्रति हमारी समझ (इंद्रियग्रहण-इन्द्रियबोध) को थोडा और विस्तृत करना भी होता है ।कालिदास के अश्लील(?) चित्र या विद्यापति-सूर के 'खुले चित्र' (उरोज,नितम्ब...)जब हमारे सामने आते हैं तो हमारे अंदर का काम -भय-संकोच कुछ देर के लिए हमारे सामने आ जाता है....हम उससे साक्षात्कार करते हैं और उसके उत्सव में स्नान कर तरोताज़ा हो जाते हैं ।एक कुशल साहित्यकार अपने काम-चित्रण के बहाने हमारी काम - भावना का उदात्तीकरण करता है ।एक ठीक विपरीत एक घटिया साहित्य के काम चित्र हमारी वृत्तियों को रेचित नहीं करता बल्कि वह मात्र उतेज़ित कर रह जाता है ।उसके दृश्य इतने स्थूल होते हैं कि उनमें वृत्तियों के रेचन के लिए अवकाश नहीं होता ।इस प्रकार एक साहित्य सेक्स के चित्र से हमें उत्तेजित करता है तो दूसरी ओर एक साहित्य हमारे सौन्दर्यबोध का विस्तार करता है ।कालिदास,जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों का मूल ध्येय काम को सौन्दर्य या मंगल रूप (काम मंगल से मंडित श्रेय/सर्ग इच्छा का है परिणाम...) में ढालने का होता है ।ऐसी स्थिति में मंटो का साहित्य हमारे सामने नए प्रश्न,नयी दुविधा खड़ी कर देता है ।मंटो के लेखन के केंद्र में व्यक्ति नहीं होता...व्यक्ति मात्र बहाना होता है यहाँ ।काम को... अश्लीलता को सौन्दर्य बनाने की समस्या कालिदास की है, मंटो की नहीं ।मंटो की मूल समस्या व्यवस्था के मन-मस्तिष्क में फ़ैली उस अश्लीलता को पकड़ने की है,जो सूक्ष्म रूप में व्याप्त है और प्रायः

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

लोगों को नहीं दिखती ।इसीलिए मंटो विवरण में जाता है ...।जयदेव,विद्यापति या कालिदास के विवरण मंटो के सामने कहीं नहीं टिकते।मंटो रति क्रिया के एक-एक कृत्य...बारीक़-से-बारीक़ विवरण का चित्रण करता है ।मंटो स्थितियों के पीछे (काम/अश्लीलता) ..... तह में जाते हैं। वे अश्लीलता के प्रभाव के नहीं, "अश्लीलता के पार्श्व के लेख़क" हैं ।और इस प्रक्रिया में यदि कहीं प्रभाव आता भी है तो वह करुणा रूप में ।कालिदास की समस्या अश्लीलता को सौन्दर्यकृत करने की है...मंटो की समस्या अश्लील भाव को कारुणिक प्रभाव में ढालने की है ।सम्भवतः यह प्रयोग करने वाला वह विश्व का पहला कथाकार है ।वह इस ढंग से पुश्किन,प्रेमचंद व चेखव जैसे कथाकारों के साथ खड़ा है,जहां जीवन के वीभत्स दृश्य भी करुणा में ढल कर हमारे सामने आते हैं ।पुश्किन के महान उपन्यास 'गाड़ीवालों का कटरा' हो या प्रेमचंद ...या अन्य कथाकारों के चित्र हमें अश्लील जीवन स्थितियों के ढेरों विवरण उपलब्ध कराते हैं...।मंटो के विवरण इनसे आगे जाकर अश्लील स्थितियों को बहुत बारीक़-से उभारकर अश्लीलता के प्रति हमारा मोहभंग करते हैं ।दूसरे बड़े कथाकार जीवन स्थितियों के प्रति वैचारिकी का निर्माण करते हैं...संवेदना भी जगाते हैं,किन्तु मंटो इन सब से अलग ...थोड़ा आगे जाकर अश्लीलता को करुणा में ढाल देता है ।अपने चित्रण की इस कुशलता में उसके पात्र कारुणिक प्रभाव उत्पन्न करने लगते हैं ।यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि मंटो जिस प्रकार स्त्री-पुरुष के रति-दृश्यों को ब्यौरेवार चित्रित करते हैं,क्या वह कथ्य की मांग थी ? जैसा कि हमने पूर्व में संकेत किया कि बड़े साहित्यकार काम के दृश्य रखकर हमारे भावों को उदात्त बनाते हैं।मंटो किसी मनोभाव की तह में जाता है,उस सम्बन्ध में सारे विवरण रखता है और फिर उन विवरणों को निरर्थक कर देता है ।'ठंढा गोस्त' में ईश्वर सिंह व कुलवंत कौर के बीच चित्रित रति-व्यापार से ज़्यादा खुले दृश्य और क्या हो सकते थे ? इतने विवरण के पश्चात तो किसी भी कहानी/साहित्य के 'अश्लील साहित्य' बन जाने का ख़तरा होता, किन्तु मंटो पाठकों को बहुत नीचे ले जाकर...'मूल' तक ले जाकर ऊँचा उठा देते हैं ।एक ओर निर्मल वर्मा जैसे साहित्यकार हैं, जो घटना से ज़्यादा घटना को बना रही प्रक्रिया व जीवन स्थितियों के क़लमकार हैं, वहीँ दूसरी ओर मंटो हैं ; जो घटना की स्थूलता...ब्यौरे के कहानीकार हैं।लेकिन मंटो की मौलिकता यही है कि वह विवरण का चित्रण कर भी उसे निरर्थक कर देता है ।'ठंढ़ा गोस्त' के रति चित्र अंत में निरर्थक हो जाते हैं...बौने...निरुद्देश्य हो जाते हैं।यह मंटो का अपना दृष्टिकोण और लेखन शैली थी ।यह लेखन- शैली अनूठी थी,मौलिक थी और समय से आगे थी...इसीलिए उसे समझने में लोगों को असुविधा होती रही ।

(3)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

सहादत हसन मंटो के साहित्य का मूल उस व्यवस्था को दिखाना है जो हैवानियत,पागलपन,वहशीपन,उन्माद और अश्लील छल-छदम पर टिकी हुई है ।इस प्रकार मंटो " परिवेशीय यथार्थ का कहानीकार" है ।किन्तु केवल बाह्य स्तर पर नहीं,अपितु बहुत गहरे भीतरी तौर पर भी...।मंटो परिवेश के बाह्य एवं आंतरिक दोनों स्तरों के चित्रण का चितेरा है ।एक परिवेश वह है जो राजनीति,सत्ता,तंत्र,तवायफ़-कोठे,उन्मादी-भोगी व्यक्तियों से बना है तो दूसरे स्तर पर वह परिवेश बहुत भीतर उस परिवेश के प्रभाव का अंकन पात्रों के व्यवहार - मनोवृत्तियों से उद्घाटित होता है । 'सबेरे जो आँख खुली मेरी' कहानी पाकिस्तान बनने(?) के बाद पाकिस्तान के बिखरने...टूटने की कहानी है ।इस कहानी का हर पात्र विद्रूप-विसंगतिपूर्ण ढंग से चित्रित हुआ है ,आधुनिक कहानी की विशेषताओं से युक्त ।जो लोग आधुनिक जीवन स्थितियों के लिए पश्चिम की ओर टकटकी लगाए रखते हैं,उन्हें ये कहानी पढ़नी चाहिए ।दरअसल जीवन की बिडम्बना,बिसंगति या अंतर्विरोध हर उस समाज का सत्य हो जाता है (हो सकता है...) जो उन्माद-हिंसा एवं व्यभिचार से भरे हुए हैं।इसी प्रकार 'ख़ुदा की कसम' कहानी में एक बूढ़ी माँ के अपने खोई बेटी को खोजने की कहानी है,किन्तु यह पूरी कहानी नहीं हैं।कहानी का मूल तो उस खोए हुए अमन-चैन को खोजना है; जो विभाजन की त्रासदी में बिखर गया है ।मंटो की ज़्यादातर कहानियाँ भारत-पाक़ विभाजन,दंगे और तवायफ़ों-वेश्यायाओं तथा व्यवस्था की असंगतियों पर केंद्रित हैं ।विभाजन पर भारत-पाक के साहित्यकारों ने बहुत कुछ लिखा है,लेकिन विभाजन के प्रभाव का जितनी गहराईपूर्वक ...त्रासदीपूर्ण जीवनस्थितियों का अंकन मंटो करता है,उतना कोई अन्य साहित्यकार नहीं कर पाया ।यशपाल का 'झूठा-सच' जैसा महाकाव्यात्मक उपन्यास भी विभाजन के कारक तत्वों एवं उनके प्रभाव का अंकन बहुत विस्तार से करता है किन्तु मंटो की छोटी कहानियाँ और लघु कहानियाँ ज़्यादा मार्मिक ढंग से इस त्रासदी को चित्रित करती हैं ।'ठंढा गोस्त','खोल दो','टोबा टेक सिंह','घाटे का सौदा','ख़बरदार','करामात','उलाहना','मुनासिब कार्रवाही....जैसी ढेरों कहानियाँ भिन्न-भिन्न ढंग से विभाजन की त्रासदी को पकड़ती हैं ।मंटो को प्रायः स्त्री-पुरुष संबंधों को उभारने वाले कहानीकार के रूप में देखा गया है, किन्तु उसकी सभी कहानियाँ " एक बड़ी त्रासदी के अलग-अलग चित्र " हैं ।यशपाल की एक प्रसिद्ध कहानी है-'परदा'।परदा में यशपाल वैचारिकता को दरकिनार कर संवेदना के स्तर पर मानवीय पाखण्ड से परदा उठाते हैं।यही काम मंटो की हर कहानी करती है ।मंटो की प्रसिद्ध कहानी 'टोबा टेक सिंह' भारत-पाक विभाजन पर बड़ा व्यंग्य है ।एक पागल की संवेदना के आगे उन्मादी सभ्यता बौनी पड़ जाती है।टोबा टेक सिंह उस ज़मीन पर मरता है,जो दोनों देशों के बीच की ज़मीन है ।तो क्या यह एक बड़े प्रतीक-सत्य

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

का सूचक है ?नहीं ,यह एक सत्य है...बहुत गहरे आंतरिक सत्य,जो प्रतीक है कि हमारी सभ्यता,व्यवस्था,सिस्टम ही पागल हो चुका है ।इस कहानी में पागल,पागल नहीं रह जाते बल्कि पूरी व्यवस्था ही पागल के रूप में उभर जाती है ।यह एक नए ढंग का चित्रण है ।'टोबा टेक सिंह' कहानी मुझे चेखव की लंबी कहानी ' वार्ड नं 6' की याद दिलाती है ।'वार्ड नं 6' मेरी पसंदीदा कहानियों में से एक है , जिसमें एक पागलख़ाने के बहाने पूरे समाज,व्यवस्था को ही पागल करार दिया गया है ।'वार्ड नं 6' कहानी का अंत उसके नायक डॉक्टर को पागलखाने में डाल कर कर दिया गया है ।कहानी का व्यंग्य इस कथ्य में है कि मौजूदा व्यवस्था ही पागलपन-उन्माद में जी रही है और हमें पागल बना रही है ।प्रश्न है कि 'टोबा टेक सिंह' और ' वार्ड नं 6' से क्या तुलना हो सकती है ? 'वार्ड नं 6' लंबी कहानी है ,लगभग 50-60 पृष्ठों की।उस अनुपात में 'टोबा टेक सिंह' 5-6 पृष्ठों की लघु कहानी है ।बावज़ूद इसके 'टोबा टेक सिंह' बड़ी कहानी है ।कारण यह कि चेखव की कहानी व्यवस्था पर एक बड़ा व्यंग्य है...प्रश्न-चिह्न है; किन्तु मंटो व्यंग्य के साथ ही मार्मिक प्रभाव पैदा कर जाते हैं,करुणा उत्पन्न कर जाते हैं...और सबसे बड़ी बात यह कि चेखव की कहानी का अंत व्यवस्था की विजय (प्रश्न चिह्न के साथ...) के साथ होता है,किन्तु मंटो की कहानी का अंत व्यवस्था की पराजय में होता है ।हालांकि यह संकेतात्मक है,किन्तु मंटो की लेखनी ज़्यादा कारुणिक प्रभाव अंकित करती है ।

(4)

मंटो की कहानियों के प्रायः पात्र निम्न वर्ग,निम्न माध्यम वर्ग के हैं ।यह मंटो का अपना परिवेश भी था ।मंटो ने जिस ग़रीबी,मुफ़लिसी के जीवन को जिया था,उसका जीवंत चित्रण उसकी कहानियों में हुआ है ।मंटो की कई कहानियां तात्कालिकता और ज़रूरत के बीच निर्मित हुई हैं।ज़ाहिर है , इस प्रक्रिया में कई कहानियाँ कमज़ोर हुई हैं ।किन्तु मंटो की कहानियों की ताकत स्वयं उसकी अपनी पीड़ा और आत्मसंघर्ष बने हैं ।मंटो की अपनी पीड़ा दूसरे व्यक्तियों की पीड़ा से मिलकर व्यापक धरातल तक पहुंच सकी है ।दूसरों की पीड़ा ने कहानियों को परिवेशीय यथार्थ प्रदान किया है तो स्वयं की पीड़ा ने उसकी कहानियों को मार्मिकता,करुणा से भर दिया है ।हिंदी साहित्य में निराला,मुक्तिबोध का आत्मसंघर्ष और सहित्यसंघर्ष एक हुए हैं।ज़ाहिर है इस प्रकार के संघर्ष के बीच लिखा जाने वाला साहित्य अपने लिए एक अतिरिक्त ऊर्जा,ताप,आवेग और कहीं-कहीं विद्रोह निर्मित कर लेता है ।यूं तो तुलसीदास का भी आत्मसंघर्ष और साहित्यसंघर्ष एक रहा है,किन्तु उसकी परिणति उनके यहाँ दैन्य,प्रपत्ति एवं समर्पण

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

(व्यापक रूप में वैकल्पिक सृजनवाद) में होती है ...किन्तु निराला,मुक्तिबोध या मंटो का साहित्य आत्मसंघर्ष व सहित्यसंघर्ष की तुलाओं पर एक साथ निर्मित हुआ है ,वह भी अपनी पूरी समसामयिकता या वर्तमान बोध के साथ ।निराला का आत्मसंघर्ष जहां व्यक्तिगत विद्रोह में परिणत हुआ ,वहीँ मुक्तिबोध का वैचारिक विद्रोह('अँधेरे में' की विराट फैंटेसी या स्वप्न...) में...।किन्तु मंटो का सहित्यसंघर्ष उसके सहित्यसंघर्ष के साथ मिलकर,एकमेव होकर किसी विद्रोह,स्वप्न,रामराज्य या फैंटेसी का निर्माण नहीं कर पाये हैं।मंटो के पात्र थके,टूटे-हारे,पराजित,बिडम्बना और अंतर्विरोध से युक्त पात्र हैं ।प्रश्न है कि इसे क्या हम मंटो की सीमा के रूप में रेखांकित करें ? मंटो के समकालीन अमरीकी लेखक और मेरे प्रिय उपन्यासकार हार्वड फ़ास्ट ने व्यवस्था के विरुद्ध जिस प्रकार ऐतिहासिक बोध व विद्रोह का वितान रचा है (कुछ-कुछ जयशंकर प्रसाद सांस्कृतिक स्तर पर वही काम अपने नाटकों में करते हैं...)...वैसा चित्रण मंटो नहीं करते ।इसके क्या कारण हो सकते हैं ? क्या मंटो की रचनात्मक प्रतिभा नया विकल्प दे पाने में सक्षम नहीं थी ? या उसके पात्र प्रतिरोधी ढंग से चित्रित करने में कथ्यगत अनुरूपता में मिसफ़िट थे ? मंटो ने जिस कथ्य का चुनाव किया है,उसमें वह आसानी से प्रतिरोधी चरित्रों/व्यक्तित्वों या नायकों का निर्माण कर सकता था (राष्ट्रीय आंदोलन के दौर में ,राष्ट्रीय आंदोलन की थींम पर लिखी गयी कहानियों में यही काम प्रेमचंद ने किया है...अन्य ने भी किया है.) । बावज़ूद मंटो ऐसा नहीं करता ।क्या इसका यह अर्थ लगाया जाए कि अपने आस-पास के परिवेश ,देश-विभाजन की त्रासदी, वहशीपन-हैवानियत के बीच मंटो का लेखन अपने समय के स्याह-पक्ष तक ही सीमित रह गया ?.... इसके आगे का जीवन मंटो के लेखन का काम्य न था ? यहाँ गहराईपूर्वक मंटो की लेखन-शैली और उसके द्वारा निर्मित कथ्य की संवेदना को समझना होगा ।मंटो की कहानियों में कथ्य की संरचना ऐसी है,जिसमें पात्रों का संघर्ष दूसरे पात्रों के साथ नहीं,अपितु परिस्थितियों के साथ होता है ।मंटो की लेखन-शैली यह रही है कि वे प्रतिरोधी पात्रों को खड़ा नहीं करते,बल्कि परिस्थितियों और पात्रों के बीच ही अन्तर्संघर्ष कराते हैं ।इस प्रकार " परिस्थितियों को ही वे प्रतिरोधी रूप" में चित्रित करते हैं।खलपात्रों के विपरीत वे परिस्थितियों को ही खड़ा करते हैं।एक बात और ध्यान देने की है कि मंटो ने खलपात्रों को नहीं, उनके वहशीपन,उनकी कामुकता एवं उन्माद को हराया है ...पराजित कराया है ।खलपात्रों की विजय में भी उनकी पराजय चित्रित है ।इस प्रकार मंटो के अधिकांश पात्र व्यवस्था व परिस्थितियों से लड़ते-टूटते पात्र हैं ।हाँ ...मंटो के लेखन-शैली की यही विशेषता रही है कि उसके व्यंग्य के केंद्र में पात्र नहीं वहशीपन व अश्लील मनोवृत्ति रही है.

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

(5)

मंटो का लेखन और साहित्य अपने समय में विवादस्पद बना रहा ।कुछ लोगों की दृष्टि में मंटो संसार के बड़े साहित्यकारों में से एक है तो कुछ लोगों की दृष्टि में साधारण कलाकार ।मंटो प्रतिभाशाली कहानीकार था ।उसकी कहानियाँ प्रायः एक प्रवाह में लिखी जाती थीं ।24 घंटे के भीतर...कुछ कहानी तो कुछ-एक घंटे के भीतर ही लिखी गयी हैं ।कमलेश्वर मंटो को विश्व का सबसे बड़ा साहित्यकार मानते हैं तो राजेन्द्र यादव चेख़व के समक्ष रखते हैं ।राजेन्द्र यादव ने संकेत किया है कि चेख़व के अतिरिक्त मंटो ही ऐसा कहानीकार है,जिसने अपनी कहानियों के दम पर प्रतिष्ठा प्राप्त की ।यानी प्रायः कहानीकारों ने कहानी के साथ उपन्यास भी लिखा है ।हालांकि मंटो ने नाटक,संस्मरण एवं पत्र विधा में भी रचना की है,किन्तु कथा साहित्य की दृष्टि से उसने केवल कहानियाँ ही लिखी हैं ।मंटो विश्व के कहानीकारों में सर्वश्रेष्ठ है या नहीं ? यह प्रश्न विवाद का हो सकता है ।कारण यह कि एक तो यह पाठकीय अभिरुचि का विषय है,दूसरे महानता के एक मापदंड नहीं हो सकते ।गोर्की की कहानियाँ जिस निम्न वर्ग को छूती हैं या चेखव की कहानियाँ जिस प्रकार मध्यमवर्ग के प्रश्नों को व्यापक स्तर पर उठाती हैं...या प्रेमचंद जिस प्रकार ग्रामीण जीवन या किसान संवेदना को उभारते हैं या टॉलस्टॉय की कहानियाँ जिस प्रकार व्यापक मानवतावाद को छूती हैं....ये अपने-अपने ढंग से बड़े प्रश्नों को समेटे हुए हैं और इस दृष्टि से सभी महान कहानीकार हैं ।अतः यह प्रश्न कि महान कहानीकार कौन है? का प्रश्न तार्किकढंग से उचित नहीं प्रतीत होता ।ओ हेनरी,मोपांसा,पुश्किन,जैनेन्द्र,अज्ञेय,निर्मल वर्मा,यशपाल, अमरकांत, भीष्म साहनी ,उदय प्रकाश....जैसे कहानीकारों की विशिष्टता मात्र उनकी लेखन-शैली नहीं रही है,अपितु यह भी रही है कि इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से नए प्रश्नों को किस हद तक उठाया है और उन प्रश्नों का रचनात्मक समाधान किस रूप में किया है? मंटो जिस दौर में लिख रहे थे , वह राष्ट्रीय आंदोलन का दौर था ।मंटो की पहली कहानी जलियावालाबाग हत्याकांड पर केंद्रित थी ।किन्तु क्रमश: मंटो ने स्वाधीनता आंदोलन से अपने साहित्य को अलग (सीधे रूप में...) कर लिया ।यह एक बड़ा प्रश्न है कि ऐसा क्यों हुआ ? या यदि मंटो राष्ट्रीय आंदोलन की थीम पर अपनी कहानियों को केंद्रित करते,तो उनकी कहानियों का स्वरुप कैसा होता ? मंटो के साहित्य की केंद्रीय विशेषता व्यक्ति/पाठक के स्व-विवेक से जुड़ा हुआ है।मंटो एक जगह लिखते हैं-" मैंने कुछ नया नहीं किया ।बस मैंने उस परदे को ही नोंच कर फेंक दिया, जिससे पाठक अपनी आँखों से सच को देख सके ।" कहना न होगा कि यह काम

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

वही कहानीकार कर सकता था,जिसे अपने लेखन पर तथा पाठकों के विवेक पर अतिरिक्त भरोसा हो। " मंटो इस प्रकार पाठकों के भीतर विवेक भरने वाला साहित्यकार" है ।ज़ाहिर है , किसी कहानीकार की महानता के लिए यह बहुत बड़ा मापदंड है कि कहानीकार अपने निष्कर्षों से,अपने विचारों से नहीं...अपितु अपने ट्रीटमेंट के प्रभाव से पाठक के भीतर विवेक जागृत करे, मंटो यही काम करता है ।सन् 1930-40 के दौर में मंटो उन प्रश्नों को उठा रहे थे,जो उस समय के उर्दू साहित्य में नए थे ।अभिव्यक्ति की आज़ादी के जिस प्रश्न को लेकर प्रगतिशील आंदोलन उठ खड़ा हुआ था,उसके अनूठे रचनाकार हैं मंटो ।मंटो के समकालीन और उनके मित्र कुर्रतुल-एन- हैदर तथा इस्मत चुग़ताई ने भी अपने लेखन में जीवन के अछूते प्रश्न उठाये हैं,किन्तु मंटो का ठाट इन सबसे अलग और विशिष्ट है ।मंटो की कहानियाँ हमारे भीतर कम्पन या सनसनी पैदा करके ही नहीं रह जातीं, अपितु सनसनी पैदा करनेवाली जीवन-स्थितियों को वे हमें बेबाक़ी से दिखा जाती हैं।ऐसा जीवन चित्र जो मार्मिक है,कारुणिक है....।इस प्रकार मंटो "पाशविक जीवन-स्थितियों के सामानांतर करुणा का वितान रचने वाला साहित्यकार " है ।इस दृष्टि से मंटो संसार का अनूठा साहित्यकार है।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)